शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

कवि की उड़ान ज्ञात-अज्ञात के बीच

विनोबा

अब ज्ञात-अज्ञात दोनों मिल करके साहित्यिकों की कल्पना शक्ति के लिए बड़ा क्षेत्र खुल रहा है। ज्ञात का विज्ञान से और अज्ञात का आत्मज्ञान से सम्बन्ध है। ज्ञात यानी जिसे व्यक्त कहते हैं। उसमें विज्ञान की खोज होती है। और अज्ञात यानी अव्यक्त में आत्मज्ञान की खोज होती है। जैसे दो पंखों से पक्षी गगन में विहार करता है, वैसे इन दो पंखों से कवि और साहित्यिक का विहार होगा और वह ऊंची उड़ान लगाएगा। आगे ऐसे महान कवि होंगे, जिनके सामने वाल्मीकि, व्यास आदि सामान्य ही रह जायेंगे। कोई वजह नहीं कि वाल्मीकि जैसे कवि आज क्यों न पैदा हों? कुछ लोग कहते हैं कि विज्ञान के कारण काव्य घटा है, क्योंकि काव्य से भ्रम निरास होता है और साहित्यिक के लिए कुछ भ्रम की आवश्यकता होती है, यह खयाल गलत है कि विज्ञान जितना बढ़ेगा, उतना रस घटेगा, बल्कि वह तो बढ़ना चाहिए। वाल्मीकि को सृष्टि में जितना रसनुभव होता था, उससे हमें कम नहीं, बल्कि अधिक रसानुभव होता है, क्योंकि जिधर देखो उधर विज्ञान के कारण नयी शक्तियां प्रकट हो रही हैं। उससे दुनिया में गूढ़ता और बढ़ी है और ज्ञान भी बढ़ा है। प्राचीनों के लिए दुनिया जितनी अप्रकट थी, उससे ज्यादा अप्रकट हमारे लिए है। जो अज्ञानी होते हैं, उनके सामने दुनिया कुछ प्रकट और कुछ अप्रकट होती है। जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता है, उसके साथ-साथ अज्ञान की मात्र भी बढ़ती है, और गूढ़ता भी बढ़ती है। ज्ञान के समान अज्ञान भी एक वैभव है। निद्रा यानी एक किस्म का अज्ञान है। अज्ञानी से पूछा जाए कि तुझे क्याक्या ज्ञान और अज्ञान है, तो वह कहेगा कि चंद बातों का अज्ञान है। लेकिन ज्ञानी से पूछा जाए, तो मालूम होगा कि उसका ज्ञान और अज्ञान दोनों ज्यादा है। ज्ञानी का सिर्फ ज्ञान ही नहीं, बल्कि अज्ञान भी बढ़ा हुआ रहता है। दुनिया की गुप्त गूढ़ चीजों का खयाल या अज्ञान जितना वाल्मीकि को था, उससे ज्यादा हमें है। गूढ़ता का ख़याल जितना बढ़ता है, उतना काव्य बढ़ता है। इसलिए इस ज़माने में काव्य घटेगा, यह खयाल गलत है। आज दुनिया ज्यादा प्रकट और ज्यादा अप्रकट है। काव्य के लिए केवल प्रकटता की ही नहीं, बल्कि अ-प्रकटता की भी जरूरत होती है। केवल अन्धकार नहीं, केवल प्रकाश नहीं, ऐसा बीच का काल काव्य के लिए हमेशा अनुकूल होता है। संधि-काल और उषःकाल में ध्यान करो, उससे स्फूर्ति मिलेगी। हम अपना अनुभव बताते हैं। हमने अपने जीवन में जो उत्तम से उत्तम साहित्य लिखा है, उसकी कल्पना उषः-काल में ही सूझी है।

विज्ञान के ज़माने में सत्य की तरफ रूचि अधिकाधिक बढ़ रही है, और बढ़ेगी। फिक्शन में क्या होता है ? कहते हैं कि उसमें चन्द्र प्रकाश की आवश्यकता होती है, सूर्य प्रकाश की नहीं। सूर्य प्रकाश में साफ़ दिखेगा, चन्द्र प्रकाश में अस्पष्ट दीखेगा। चन्द्र प्रकश में कभी भूत दीखेगा, कभी गेंडा, कभी एक सींग वाला दीखेगा और होगा पेड़ ही। ऐसा भ्रम होगा, तब काव्य होगा। अँधेरे में अमावस्या की रात हो, काव्य नहीं होगा, क्योंकि कुछ भी नहीं दीखेगा। सूर्य प्रकाश में सब स्पष्ट दीखेगा, इसलिए उसमें काव्य नहीं होगा। काव्य के लिए भ्रम चाहिए। विज्ञान का ज़माना है, तो भ्रम का क्षेत्र कम होता गया है, इसलिए काव्य उत्तरोत्तर कम होगा, ऐसा लोग मानते हैं। लेकिन मैं उलटा मानता हूँ। मैं मानता हूँ कि इसके आगे विज्ञान के ज़माने में ऐसा साहित्य निकलेगा कि दांते और शेक्सपीयर, वाल्मीकि और कालिदास फीके पड़ेंगे। ऐसे महान साहित्यिक होंगे। यह किस आधार से मैं कहता हूँ? इसलिए कि साहित्य के लिए जो चाहिए, वह विज्ञान सप्लाय कर रहा है। विज्ञान के कारण ज्ञान का क्षेत्र भी बढ़ता है और अज्ञान का भी बढ़ता है। आज अज्ञान कितना है ? खूब है, यह ध्यान में आयेगा। कितना लंबा-चौड़ा, गहरा और व्यापक अज्ञान है, इसका अनुभव आयेगा। सारांश काव्य-शक्ति के लिए कुछ ज्ञान क्षेत्र, कुछ अज्ञान क्षेत्र, कुछ अँधेरा और कुछ प्रकाश चाहिए। ये दोनों खूब बढ़ेंगे। इसलिए साहित्य कला और काव्य कला खूब बढ़ेगी। **(भूदान महायज्ञ : काव्य-सरिता प्रवाह, संकलन संपादन - ज्योति पाटणकर)**